कालसर्प दोष का जातक के जीवन पर प्रभाव

पौराणिक ज्योतिष में कालसर्प दोष के नाम से शास्त्रों में कोई योग अथवा दोष वर्णित नही है अपितु नाग दोष एवं सर्पदोष के नाम से कुछ दोषों की व्याख्यया अवश्य की गई है किन्तु आधुनिक ज्योतिष में इस दोष को काफी महत्व दिया जा रहा है क्या वास्तव में कालसर्प दोष इतना पीड़ा दायक है ? क्या कालसर्प दोष से पीड़ित व्यक्ति का जीवन सदैव संघर्षमय रहता है ?क्या कालसर्प दोष किसी व्यक्ति के जीवन में सदैव नकारात्मकता देता है ? इन सब प्रश्नों के उत्तर हेतु सर्वप्रथम यह जानकारी आवश्यक है कि वास्तव में कालसर्प दोष क्या है ?

कालसर्प दोष क्या है :– किसी जातक की कुण्डली में जन्म के समय समस्त ग्रह राहू एवं केतु के मध्य स्थित हो तो उसे काल सर्प दोषयुक्त कुण्डली माना जाता है। इस प्रकार 12 लग्नों में राहू की चाल में आने वालें प्रथम भाव से द्वादश भावों तक 12 x12 = 144 प्रकार के उदित गोलार्द्ध कालसर्प दोष बनतें है इसी प्रकार से केतु की चाल में आने वालें प्रथम भाव से द्वादश भावों तक 12 x12 = 144 प्रकार के अनुदित गोलार्द्ध कालसर्प दोष बनतें है । इस प्रकार आधुनिक ज्योतिषीयों के मतानुसार कुल 288 प्रकार के कालसर्प दोष मानें गयें है । उक्त के अतिरिक्त जब कोई एक ग्रह राहू केतु की जद से बाहर हो तो उसे आंशिक कालसर्प दोष की श्रेणी में माना जाता है । वैसे तो केतु की चाल में आने वालें अर्थात् अनुदित कालसर्प दोष को कालसर्प दोष न मानकर **कालामृत योग** माना गया है किन्तु अधिकांश विद्धानों द्वारा इसें भी कालसर्प दोष मानकर उसी के अनुरूप अनुदित काल सर्पदोष अर्थात् कालामृत योग के भी निदान करवायें जातें है । मुख्यतः 12 प्रकार के कालसर्प दोष माने गयें है जो निम्न प्रकार है :–

(1) **अनंत काल सर्प दोष** :– यदि जातक की लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में राहू एवं सप्तम भाव में केतु हो और शेष सभी ग्रह राहू एवं केतु के मध्य स्थित हो तो यह स्थिति अनंत कालसर्प दोष की बनती है । ऐसा जातक दुष्टबुद्दि कपटी तथा लम्पट

होता है । सामान्यत लग्न में राहू जातक को मानसिक पीड़ा देता है एवं सप्तम भाव में केतु से दाम्पत्य जीवन में दुष्प्रभाव डालता है ऐसा जातक अदालती मामलों में अत्यधिक नुकसान उठाता है साथ ही ऐसे व्यक्ति को अपने अस्तित्व की पहचान के लियें काफी संघर्षो का सामना करना पड़ता है, किन्तु यह सब स्थिति राहू केतु किस राशि के है एवं उनकी पंचम, सप्तम एवं नवम दृष्टियाँ किन राशियों एवं ग्रहों पर पड़ रही है ? आदि पर निर्भर करता है।

(2) **कुलिक कालसर्प दोष** :– यदि जातक की लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में राहू एवं अष्टम भाव मे केतु हो एवं शेष सभी ग्रह राहू एवं केतु के मध्य हो तो यह स्थिति कुलिक कालसर्प दोष की बनती है । सामान्यत द्वितीय भाव में राहू की स्थिति जातक को मिथ्याभाषी एवं कर्कशवाणी का बनाती है एवं अष्टम भाव में केतु की स्थिति जातक खोजी एवं अन्वेषक बनानें के साथ–साथ उसें उदर, फीशर एवं पाईल्स आदि का रोगी बनाती है ।

(3) **वासुकि काल सर्पदोष** :– यदि तृतीय भाव में राहू एवं नवम् भाव में केतु हो एवं शेष सभी ग्रह राहू केतु के मध्य हो तों ऐसी स्थिति वासुकि काल सर्प दोष को इंगित करती है। ऐसी स्थिति का जातक सामान्यत कभी–कभी अतिविश्वासी (overconfident) एवं कभी–कभी अल्प–विश्वासी **(Depressed)** होता है ऐसे जातकों के अपने अनुजों से संबध अच्छे नही रहतें ।

(4) **शंखपाल कालसर्प दोष** :–जिस जातक की कुण्डली में चतुर्थ भाव में राहू एवं दशम भाव मे केतु हो एवं समस्त ग्रह राहू केतु के मध्य हो तो यह ग्रह स्थिति शंखपाल कालसर्पदोष का निर्माण करती है । इस काल सर्प दोष के सामान्य परिणामों के रूप में ऐसे जातकों को देर–सवेर अपना जन्म स्थान छोड़ना पड़ता है । किसी ना किसी कारण से ऐसे जातक अपने माता–पिता से दूर रहते है साथ ही ऐसे जातकों के व्यवसाय में स्थायित्व नही होता ।

(5) **पदम कालसर्प दोष** :–यदि किसी जातक की कुण्डली में पंचम भाव में राहू एवं एकादश भाव में केतु हो एवं शेष सभी ग्रह राहू केतु के मध्य स्थित हो तो ऐसी स्थिति

पदम कालसर्प दोष की मानी जाती है । इस श्रेणी के काल सर्पदोष की स्थिति में सामान्यत ऐसे जातक की शिक्षा दीक्षा में व्यवधान आतें है जातक को संतान विलम्ब से प्राप्त होती है साथ ही जातक के अपने बड़ें भाईयों से संबध अच्छें नही रहतें एवं जातक को अपने जीवन में मित्रों से धोखा मिलता है ।

(6) **महापदम कालसर्प दोष**:–जिस जातक की कुण्डली में षष्ठ भाव में राहू एवं द्वादश भाव में केतु हो एवं समस्त ग्रह राहू केतु के मध्य हो तो ऐसी स्थिति महापदम् कालसर्प दोष को इंगित करती है । ऐसे जातकों कों अपने जीवन में रोगों का सामना करना पडता है जातक सदैव ऋृणि बने रहता है जातक को यात्रा में पीडाऐं आती है निरर्थक व्यय करना पडता है एवं साथ ही जातक के जीवन में भोगविलास में बाधा उत्पन्न होती है । द्वादश भाव में बैठा केतु मोक्ष के जीवन को इंगित करता है ।

(7) **तक्षक कालसर्प दोष** :– किसी जातक की कुण्डली में यदि सप्तम भाव में राहू हो एवं लग्न में केतु हो तथा समस्त ग्रह राहू एवं केतु के मध्य हो तो ऐसी ग्रह स्थिति तक्षक कालसर्प दोष बनाती है । सप्तम भाव में राहू की स्थिति से जातक के वैवाहिक जीवन में दुषप्रभाव आतें है साथ ही लग्न में बैठा केतु जातक से मतिभ्रम के कारण गलत निर्णय करवाता है ।

(8) **कर्कोटक कालसर्प दोष**:– यदि अष्टम भाव में राहू एवं द्वितीय भावमें केतु हो और शेष समस्त ग्रह राहू केतु के मध्य हो तो ग्रहों की यह स्थिति कर्कोटक कालसर्प दोष को इंगित करती है । इस कालसर्प दोष से ग्रसित व्यक्ति के जीवन में दुर्घटनाओं की अधिकता रहती है । जातक को जीवन में पैरों संबधी तकलीफों से गुजरना पडता है । साथ ही जातक वाकचातुर्य का धनी होता है ।

(9) **शंखचूड कालसर्प दोष**:–यदि नवम भाव में राहू एवं तृतीयभाव में केतु हो एवं शेष सभी ग्रह राहू केतु के मध्य हो तो यह ग्रहस्थिति शंखचूड कालसर्प दोष की स्थिति बनाती है । चूँकि जन्म कुण्डली में राहू एवं केतु की नवम एवं तृतीय भावों में स्थिति को अच्छा माना गया है अतः यदि राहू वृष,मिथुन, अथवा कन्या राशि का हो एवं केतु वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि का हो तो शंखचूड कालसर्पदोष की स्थिति जातक के जीवन में नकारात्मक प्रभाव नही डालती इसकें विपरीत शत्रु राशि यथा कर्क, सिह

आदि के राहू केतु को जो ऐसी स्थिति में उक्त कालसर्प दोष से पीडित जातक के जीवन में बल पराक्रम की कमी भाईयों से मतभेद एवं भाग्य में अवरोध की स्थिति देखने को मिलती है ।

(10) **घातक(पातक) कालसर्प दोष** :– किसी जातक की कुण्डली में यदि दशम भाव में राहू हो एवं चतुर्थभाव में केतु हो तथा शेष सभी ग्रह राहू केतु के मध्य स्थिति हो तो यह स्थिति घातक कालसर्प दोष को इंगित करती है । इस काल सर्प दोष के व्यक्ति के जीवन में बार–बार व्यवसाय में परिवर्तन आतें है । माता–पिता से दूर रहने की स्थिति बनती है । जातक मन से अंशात रहता है तथा देर सवेर ऐसे जातक को अपनी जन्म स्थान से दूर रहना पडता है ।

(11) **विषधर कालसर्पदोष** :– यदि एकादश भाव में राहू एवं पंचम भाव में केतु हो तथा समस्त ग्रह राहू केतु के मध्य स्थित हो तो यह विषधर कालसर्पदोष की स्थिति बनती है । ऐसे जातक की शिक्षा दीक्षा में व्यवधान आता है संतान प्राप्ति में विलम्ब होता है तथा जातक को मित्रों से धोखा मिलता है जातक के बड़ें भाईयों से संबध मधुर नही रहतें ।

(12) **शेषनाग कालसर्प दोष** :– यदि जातक की जन्म कुण्डली के बाहरवें भाव में राहू एवं षष्ठ भाव में केतु स्थित हो तथा शेष सभी ग्रह राहू केतु के मध्य स्थिति हो तो शेषनाग कालसर्पदोष की स्थिति बनती है । ऐसे काल सर्प दोष वालें व्यक्ति को जीवन में अधिकांशतया रोगो को सामना करना पडता है जातक के जीवन में ऋणों की स्थिति बनी रहती है । व्यर्थ की यात्राऐं एवं व्यर्थ का व्यय जातक के जीवन में होता रहता है ।

उक्तानुसार मुख्य बारह प्रकार के कालसर्प दोषों से उत्पन्न होने वाली सामान्य पीड़ाओं का वर्णन किया गया है । किन्तु यह आवश्यक नही है कि सभी प्रकार के कालसर्प दोष से युक्त जन्मपत्री वाला जातक सदेव संघर्षमय जीवन यापन करें । मुख्यता लग्न में राहू एवं सप्तम भाव में केतु से बनने वाला कालसर्पदोष अर्थात **अनंत काल सर्प दोष** द्वितीय भाव में राहू एवं अष्टम भाव में केतु अर्थात् **कुलिक कालसर्प दोष** षष्ठ भाव में राहू एवं द्वादश भाव में केतु हो अर्थात् **महापदम् कालसर्प दोष**, सप्तम में

राहू एवं लग्न में केतु हो अर्थात् **तक्षक कालसर्प दोष** अष्टम भाव में राहू एवं द्वादश भाव में केतु हो अर्थात **कर्कोटक कालसर्प दोष** एवं द्वादश भाव में राहू एवं षष्ठ भाव में केतु हो **अर्थात शेषनाग कालसर्प दोष** ही जातक के जीवन में बडी पीड़ाऐं देतें है, क्योंकि उक्त स्थितियों में राहू केतु स्थिति अथवा दृष्टि से जातक की लग्न कुण्डली के मारक भावों पर प्रत्यक्ष –अप्रत्यक्ष प्रभाव डालतें है । कालसर्प दोष से जीवन में आने वालें अवरोधों के विश्लेषण हेतु सर्वप्रथम यह देखना आवश्यक है कि राहू एवं केतु किन राशियों कें है यथा जातक की कुण्डली में बननें वालें कालसर्प दोंष में राहू वृष, मिथुन, अथवा कन्या राशि का हो इसी प्रकार केतु वृश्चिक धनु अथवा मीन राशि का हो तो कालसर्प दोष जनित पीड़ा न्यून होती है । साथ ही इससे प्राप्त होने वालें परिणामों के लियें यह भी देखना अनिवार्य है कि जिस राशि में राहू–केतु बैठे है वह राशि राहू –केतु की मित्र राशि है अथवा शत्रु राशि के? राहू एवं केतु की पंचम, सप्तम एवं नवम दृष्टियाँ किन राशियों पर पड़ रही है वहाँ राहू केतु के मित्र ग्रह बैठे है अथवा शत्रु ग्रह ? जिस राशि में राहू–केतु बैठकर कालसर्प दोष का निर्माण कर रहें है उन राशियों के स्वामियों के अंश यदि राहू केतु के अंशों से अधिक हो तो कालसर्प दोष की बड़ी पीड़ाऐं जातक के जीवन में नही आती है । कालसर्प दोष के साथ–साथ यदि जातक के जीवन में धन एवं रोजगार से संबधित भावों अर्थात द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश तथा आयेश के स्वामियों की भी स्थिति अच्छी न हो तो कालसर्प दोष के परिणामों ज्यादा पीड़ा दायक होतें है यथा यदि जातक की कुण्डली में कालसर्प दोष के साथ–साथ जातक का भाग्येश कर्मेश, आयेश एवं धनेश भी त्रिक भावों में हो अथवा त्रिक भावों के स्वामियों के साथ हो अथवा जन्म पत्रिका में पापप्रभाव में हो साथ ही जातक के जीवन में युवा अवस्था में ही राहू अथवा केतु की महादशा आ जायें तो जातक का जीवन संघर्षमय हो जाता है । जातक के रोजगार में स्थायित्व नही आता। जातक मानसिक एवं शारारिक रूप से पीड़ित रहतें है । इसकें विपरीत जातक की कालसर्प दोष युक्त कुण्डली होने परभी यदि जातक का लग्नेश, पंचमेश, नवमेश, दशमेश पूर्णबली एवं पाप प्रभाव से मुक्त हो तथा जातक के जीवन में इनमें से किसी ग्रह की अर्थात् योगकारक ग्रह की महादशा आ जायें तो कालसर्प दोष जातक के जीवन में

अवरोध उत्पन्न नही करता है । अपितु जातक को जीवन में स्थायित्व प्राप्त होता है । जातक अर्थोपार्जन से जुड़ता है । अत : इस प्रकार से जातक के जीवन में आने वाली किसी भी पीड़ा के लियें कालसर्प दोष को ही पूर्ण रूप से ही जिम्मेदार ठहरा दिया जाना उचित नही होगा । श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा जो वर्तमान मे सर्किट हाउस प्रबन्धक के पद पर जालोर में पदस्थापित है मेरे मित्र के बड़े भ्राता है । ये विगत आठ वर्षो से ज्योतिषीय परामर्श हेतु मेरे सम्पर्क में है । श्री शर्मा की कुण्डली पूर्ण कालसर्प दोष की कुण्डली है. तीसरे भाव में राहू एवं नवम् भाव में केतु की स्थिति **वासुकि कालसर्प दोष** का निर्माण कर रही है किन्तु कालसर्प दोष से संबधित कोई बड़ी पीड़ा श्री शर्मा के जीवन में नही रही है । श्री शर्मा तीन पुत्रों के पिता है तथा तीन पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र ज्यूडिशयरी सर्विस में स्टेनोग्राफर के पद पर कार्यरत है दूसरा पुत्र एमबीए कर एक नीजि कम्पनी में कार्यरत है । तीसरे पुत्र अध्ययनरत है । श्री शर्मा का जन्म 21.अगस्त 1955 दोपहर 12:05 जयपुर(राज0) में हुआ । पिता श्री रामकृष्ण शर्मा सचिवालय में ओ.एस. के पद से सेवा निवृत हुयें है । श्री शर्मा के तृतीय भाव में राहू से नवम भाव में केतु तक की स्थिति से कालसर्प दोष बननें के बावजूद श्री शर्मा के दो अनुज भाई एवं एक अनुजा है । श्री शर्मा 19 वर्ष की आयु में अगस्त 1974 में राहू की महादशा में शनि के अन्तर में सर्किस हाउस में कनिष्ठ लिपिक के पद पर पदस्थापित हुयें । श्री शर्मा का विवाह राहू की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में नवम्बर 1978 में हुआ । 1982 में श्री शर्मा की प्रथम पदौन्नति सीनियर हाउस कीपर के पद पर हुई । एवं वर्ष 1997 में श्री शर्मा सीनियर हाउस कीपर से सर्किस हाउस प्रबन्धक के रूप पदौन्नति प्राप्त की तथा तभी श्री शर्मा सर्किट हाउस प्रबन्धक के रूप में सेवारत है ।

नाम:– राजेन्द्र कुमार शर्मा.
जन्मतिथि:–21.08.1955
जन्मसमय:–दोपहर 12:05
जन्म स्थान:– जयपुर(राज0)

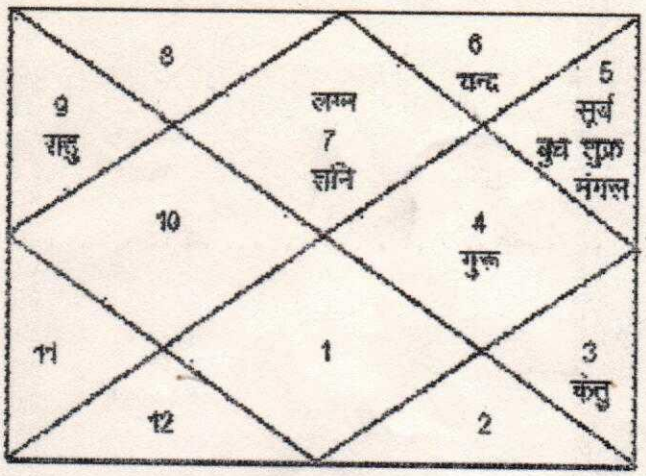

ग्रहों के विश्लेषण के आधार पर यह जानने का प्रयास करतें है कि श्री शर्मा की कुण्डली में कालसर्प दोष होने के बावजूद जातक का अब तक जीवन आनन्दपूर्वक कैसे बीता । सर्वप्रथम कुण्डली के योगकारक भावों एवं उनकें स्वामियों का विश्लेषण करने से यह स्थिति स्पष्ट होती है । श्री शर्मा की कुण्डली तुला लग्न की है । जातक का चतुर्थेश एवं पंचमेश अर्थात् योगकारक ग्रह शनि उच्च का होकर तुला राशि का 22 अंशों का बल लियें हुये है, साथ ही लग्न में बैठा <u>शश योग</u> का निर्माण कर रहा है । इसीलियें जातक के सुखों में कोई बाधा नही आई । जातक के तृतीय भाव में राहू एवं नवम् भाव में केतु होने के बावजूद जातक के दों अनुज भ्राता एवं एक अनुजा है । ग्रहों के आधार पर विश्लेषण करने के पता चलता है कि तृतीयेश गुरू उच्च का होकर जातक की कुण्डली में दशम् भाव में बैठा है साथ ही छोटे भाई का कारक ग्रह मंगल मित्र सूर्य के साथ एकादश भाव में बेठा है । अतः छोटे–भाई बहनों का सुख जातक को प्राप्त है । इसी प्रकार पराशरीय राज योग पद्धति अनुसार जातक की कुण्डली में नवमेश बुध एवं एकादेश सूर्य का एकादश भाव में एक साथ बैठना अल्प आयु में राज्यसुख प्राप्ति का कारक बना । दूसरें दृष्टिकोण से भी इस स्थिति का विश्लेषण करें तो जातक की कुण्डली में कालसर्प दोष का निर्माण करने वालें ग्रह राहू एवं केतु अंशों के दृष्टि–कोण से 1–1 अंशों का क्षीण बल लियें हुयें है जबकि राहू स्थित स्थान का स्वामी गुरू लग्न कुण्डली में 21 अंशों का होकर अपनी उच्च राशि कर्क राशि का होकर कुण्डली के दशम भाव में बैठा हुआ है इसी प्रकार

केतु स्थित राशि का स्वामी बुध अपने मित्र सूर्य की राशि में 18 अंशों का होकर एकादश भाव में बैठा है । इस कारण में जातक की कुण्डली में राहू केतु का विशेष दुष्प्रभाव देखने को नही मिला । वर्ष 2006 में जातक के जीवन में हृदय रोग की पीड़ा रही जो जातक के शनि की महादशा में केतु के अर्न्तदशा का काल था, जिसका भी कालसर्प दोष से संबध नही बनता क्योकि कालसर्पदोष चतुर्थ(हृदयकारक भाव)–दशम से न होकर तृतीय–नवम से संबधित है । ग्रहों के विश्लेषण के आधार पर इस पीड़ा का कारण जातक की कुण्डली में सूर्य पर राहू की नवम दृष्टि का होना एवं हृदयकारक स्थान चतुर्थेश के स्वामी शनि पर केतु की पंचम् दृष्टि होना रहा ।

नाम :– योगेश्वर वशिष्ठ
जन्म तिथि :–03 फरवरी 1962
जन्म समय :– रात्रि 08:45
जन्म स्थान :– बूंदी(राज0)

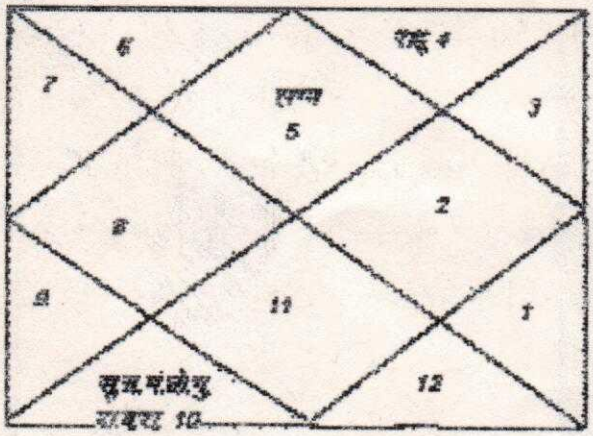

कालसर्प दोष के सही विवेचन के प्रयास हेतु एक अन्य जातक की जन्मपत्रिका का उदाहरण यहाँ देना चाहूगाँ । श्री योगेश्वर वशिष्ठ गत 6 वर्षो से ज्योतिषीय परामर्श हेतु मेरे सम्पर्क में है । श्री वशिष्ठ का जन्म 03 फरवरी 1962 को रात्रि 08:45 पर बूंदी(राज0)में हुआ । श्री वशिष्ठ की कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि का राहू एवं षष्ठ भाव में मकर का केतु शेष सभी सात ग्रहों के साथ बैठा है । अर्थात् श्री वशिष्ठ की कुण्डली में **शेषनाग कालसर्प दोष** है । श्री वशिष्ठ जन्म से ही अपने जीवन को संघर्षो से जी रहें है । वर्ष 1981 में मंगल की महादशा में शुक्र के अर्न्तदशा में श्री वशिष्ठ को अपने पिता की मृत्यु को झेलना पड़ा एवं इसी कारण श्री

वशिष्ठ आगें अध्ययनरत नही रह पायें । श्री वशिष्ठ मात्र सैकेण्ड्री एज्यूकेशन ले सकें तदुपरांत अपनें जीवन के संचालन के लियें पान की छोटी से गुमटी (दुकान) लगाकर जीविकोपार्जन प्रारम्भ किया । वर्ष 1984 से श्री वशिष्ठ कालीन बुननें की कला का प्रशिक्षण लेकर स्वयं इस व्यवसाय से जुडें । एवं वर्ष 1997 तक श्री वशिष्ठ इसी व्यवसाय से जुडें रहें । इसी दौरान वर्ष 1991 में श्री वशिष्ठ की माँ का देहावसान हुआ । श्री वशिष्ठ का वर्ष 1994 में राहू की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा में विवाह सम्पन्न हुआ । वर्ष 1995 में श्री वशिष्ठ को पुत्र संतति एवं मई 2001 में कन्या संतति की प्राप्ति हुई । श्री वशिष्ठ के पास वर्तमान में 47 वर्ष की आयु हो जाने के उपरांत भी रोजगार का स्थाई साधन नही है । श्री वशिष्ठ मात्र 3000/—मासिक के वेतन पर सप्लाई कार्य से जुड़े हुयें है साथ ही अंशकालिक रूप से देवस्थान में सेवापूजा का कार्य करतें है । ज्योतिषीय आधार पर श्री वशिष्ठ की कुण्डली का विश्लेषण करें तो कुण्डली में शेषनाग काल सर्पदोष के अतिरिक्त कई अन्य कारण ऐसे उपलब्ध है जिससें उनकें जीवन में संघर्षो की अधिकता रही है । सर्वप्रथम जातक की शिक्षा का विश्लेषण करें तो श्री वशिष्ठ की कुण्डली का पंचमेश गुरू षष्ठ भाव में अपनें शत्रु शुक्र शनि एवं बुध से युक्ति कर रहा है । साथ ही पंचमेश गुरू एवं प्रारम्भिक शिक्षा का कारक(द्वितीयेश) बुध दोनों ही सूर्यसे अस्त है बुध वक्री भी है । जातक के पिता का कारक ग्रह सूर्य केतु के साथ षष्ठ भाव में होकर ग्रहण बना रहा है साथ ही दशमेश शुक्र भी सूर्य से अस्त है अतः जातक को अपने पिता का पूर्ण साथ नही मिला । जातक के जीवन में आयस्त्रोंतों के विश्लेषण को देखें तो धन एवं कर्म का विश्लेषण करने के लियें जातक के भाग्येश,कर्मेश,एकादेश, एवं धनेश का विश्लेषण करतें है । श्री वशिष्ठ की कुण्डली में भाग्येश मंगल,कर्मेश शुक्र, धनेश एवं आयेश बुध सभी ग्रह कुण्डली के त्रिक भाव में बैठकर बलहीन हो गयें अत : जातक की जीवन में रोजगार का स्थायित्व नही रहा । जिससें आय के स्त्रोंतों में बार—बार अवरोध आतें रहें । इन सभी कारणों के अतिरिक्त कालसर्प दोष भी इस कुण्डली में पीड़ा वृद्धि का कारक रहा है चूँकि जातक की कुण्डली में राहू कर्क राशि में 24 अंश का होकर बैठा है जबकि कर्कराशि का स्वामी चन्द्रमा स्वयं मात्र 2 अंशों के होकर अपनें शत्रु शनि की राशि में

केतु से दूषित है । इसी प्रकार केतु मकर राशि में 24 अंश के होकर बैठें है जबकि मकर का स्वामी शनि मात्र 10 अंश लियें हुयें है । इसी कारण कालसर्प दोष का जीवन पर नकारात्मक प्रभाव ज्यादा प्रतीत हुआ ।

यद्यपि किसी व्यक्ति के जीवन में पड़नें वालें कालसर्प दोष के प्रभावों का विश्लेषण किया जाना एक विस्तृत विषय है । इस पर जितना शोध किया जायें कम है एवं इस पर आगें ओर अधिक विश्लेषण की आवश्यकता है । यदि किसी जातक की कुण्डली में कालसर्प दोष विद्यमान हो तो कालसर्प दोष के निदान हेतु कालसर्प दोष का निर्माण करने वालें दोनों छायाग्रहों राहू एवं केतु के बीज मंत्रों के साथ-साथ **शिव-आराधना** सर्वश्रेष्ठ उपचार है । कालसर्प दोष के निदान के साथ-साथ जिस जातक की कुण्डली में यह दोष स्थित हो उसकी पीड़ाओं के विश्लेषण के लियें संबधित भाव के स्वामी, कारकग्रह,संबधित भाव पर दृष्टि डालनें वालें ग्रहों आदि का निदान भी करवाया जाये तो जातक कों शीघ्र लाभ प्राप्त होता है ।

रविन्द्र कुमार दधवा
'शिवाशीष' मकान न0 65,
न्यू कॉलोनी बूंदी